प्रातः क्लास 10/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप कहते हैं बच्चों को। यह भी बच्चा है ना। देहधारी सभी बच्चे हैं। तो रूहानी बाप आत्माओं को कहते हैं। आत्मा ही मुख्य है यह तो अच्छी रीति समझो। यहाँ जब सामने बैठते हो तो ऐसे नहीं शरीर से न्यारा हो गुम हो जाना है। शरीर से न्यारा हो गुम हो जाना यह भी कोई याद की यात्रा की अवस्था नहीं है। यहाँ तो सुजाग हो बैठना है। चलते–फिरते उठते–बैठते अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। बाप ऐसे नहीं कहते कि यहाँ बैठे बेहोश हो जाओ। ऐसे बहुत बैठे2 गुम हो जाते हैं। यह भी रांग। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में कमल फूल समान पवित्र रहना है तो जरूर सुजाग रहेंगे ना। और फिर पवित्र भी बनना है। पवित्रता बिगर धारणा न होगी। किसका कल्याण न कर सकेंगे। किसको कह न सकेंगे। जो पवित्र बनते नहीं दूसरे को कहते हैं, वह तो पंडित हो गया। मियाँ मिट्ठु भी न बनना है। फिर वह अन्दर दिल में खाती रहेगी। ऐसे मत समझो हम सुन में चले जाते हैं, आँखें बन्द हो जाती हैं यह कोई याद की अवस्था है, नहीं। इसमें तो चैतन्य अवस्था में रह बाप को याद करना है। नींद करना कोई याद नहीं। बच्चों को कई प्वाइंट्स समझाई जाती है। शास्त्रों में तो दिखाया है सातों भूमिका में चले जाते, उनको दुनिया का पता नहीं पड़ता। तुमको तो दुनिया का पता है ना। यह छी–छी दुनिया है। बाप को कोई भी नहीं जानते। अगर बाप को जानें तो सृष्टि चक्र को भी जान जायें। बाप बतलाते हैं यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है। मनुष्य पुनर्जन्म कैसे लेते हैं। (स)तयुग में भल बड़ी आयु हो जाती तो भी बेसुरत नहीं होंगे। बाकी सन्यासियों का तो है हठयोग। आँखें बन्द करना, गुफाओं में बैठ बेसुरत हो जाना। तुमको तो बाप कहते हैं गृहस्थ–व्यवहार में रहते सुजाग रहना है। शून्य चला जाना यह कोई अवस्था नहीं। धंधा आदि करना है, गृहस्थ व्यवहार को सम्भालना है। शुन्य में नहीं जाना। काम–काज करते बुद्धि से बाप को याद करना है। जरूर काम करेंगे तो आँखें खोलकर करेंगे ना। धंधा आदि सभी (कु)छ करते रहो बुद्धि योग बाप के साथ हो। इसमें गफलत नहीं करनी है। दुकान पर बैठे आँखें बन्द हो जावेगी। कोई टिपर ही ले जावेंगे। पता भी नहीं पड़ेगा। यह कोई अवस्था नहीं। हम देह से न्यारे हो जाते हैं यह भी हठयोगियों की बातें हैं। रिद्धी सिद्धी वाले करते हैं। बाप तो अच्छी रीति बैठ समझाते हैं इसमें आँखें बन्द (न)हीं करनी है। बाप कहते हैं और–2 मित्र–सम्बन्धियों आदि को जो बैठकर याद करते हो, वह सभी भूल (जा)ओ। एक बाप को याद करना है। सिवाय याद की यात्रा के पाप कट न सके। भोग ले जाते हैं, गुम हो ..... सूक्ष्मवतन में। उसमें क्या होता है जितना समय वहाँ हैं विकर्म विनाश हो न सके। शिवबाबा को याद कर न सके। न बाबा की वाणी ही सुन सकेंगे। तो घाटा पड़ जाता है; परन्तु यह ड्रामा में नूँध है इसलिए जाते हैं। ....र आकर मुरली सुनते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं जाओ, फौरन आओ बैठो नहीं। गो सुन कम सुन। खेलपाल .....ना बाबा ने बन्द कर दिया है। यह भी घूमना–फिरना, रुलना–पलना हुआ ना। भक्ति मार्ग में रुलना–पिलना बहुत होता है; क्योंकि अंधियारा मार्ग है ना। मीरा ध्यान में बैकुण्ठ में चली जाती थी। योग वा पढ़ाई थोड़े ही .....। क्या उसने सद्गति को पाया? स्वर्ग जाने के लायक बनी? पावन बनी? जन्म–जन्मान्तर के पाप कटे? बिल्कुल नहीं। जन्म–जन्मान्तर के पाप तो बाप की याद से ही कटनी है। बाकी सा0 आदि से कोई फायदा नहीं। यह तो भिती है। न याद है न ज्ञान है। भक्तिमार्ग में यह सिखलाने वाला कोई होता ही नहीं तो सद्गति को ..... ही नहीं, भल कितना भी सा0 हो। शुरू में तो बच्चियाँ आपे ही चली जाती थीं। बाबा–मम्मा थोड़े ही जाते । यह तो शुरू में सिर्फ बाबा को स्थापना और विनाश का सा0 हुआ। पीछे तो कुछ भी नहीं। हम किसको भी ....ते नहीं हैं। हाँ, बिठाकर कह देते हैं इनकी रस्सी खैंचो। वह भी ड्रामा में होगा तो रस्सी खैचेंगे। नहीं तो नहीं। ..... तो ढेर होते हैं। जैसे शुरू में बहुत सा0 करते थे, पिछाड़ी में भी बहुत सा0 करेंगे। मिरवा मौत मलुका शिकार। .....ने ढेर मनुष्य हैं वह सभी शरीर छोड़ देंगे। शरीर सहित कोई सतयुग में वा शान्तिधाम में नहीं जावेंगे। .....ने ढेर मनुष्य हैं। सभी विनाश को प्राप्त करेंगे। बाकी एक आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना हो

रही है ब्रह्मा द्वारा। तुम बच्चियाँ गांव–2 में जाकर कितनी सर्विस करती हो। यह कहते हो कि अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। देहली में माथुर है वह भी विलायत जाते हैं सर्विस करने। सन्यासी लोग तो राजयोग सिखलाना जानते ही नहीं। बाप बिगर राजयोग सिखलावे कौन? तुम बच्चों को अभी बाप राजयोग सिखला रहे हैं। फिर राजाई मिल जाती है। तुम अपार सुखों में रहते हो। वहाँ तो फिर याद करने की दरकार ही नहीं। रिंचक भी दुख नहीं होता। आयु भी बड़ी निरोगी होती है। यहाँ कितने दुख हैं। ऐसे तो नहीं बाप ने दुख के लिए खेल रचा है। यह तो खेल दुख–सुख, हार–जीत का अनादि है। इन सभी बातों को सन्यासी जानते ही नहीं तो समझा कैसे सकते। वह तो भक्तिमार्ग के शास्त्र पढ़ने वाले हैं। तुमको कहा जाता है अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। वह सन्यासी फिर आत्मा को ब्रह्म समझ कर याद करते हैं। ब्रह्म को परमात्मा समझते हैं। ब्रह्मज्ञानी हैं। वास्तव में ब्रह्म है रहने का स्थान। जहाँ तुम आत्माएँ रहते हो। वह फिर ब्रह्म अथवा तत्व को परमात्मा समझते हैं। कहते हैं हम उनमें लीन होंगे। उनका ज्ञान ही सारा उल्टा है। यहाँ तो बेहद का बाप तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। वह समझते हैं भगवान 40 हजार वर्ष बाद आवेंगे। इसको कहा जाता है अज्ञान–अंधियारा। बाप कहते हैं नई दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का विनाश कराने वाला तो मैं हूँ। मैं स्थापना कर रहा हूँ। विनाश भी समाने खड़ा है। अभी जल्दी करो। पावन बनो तब ही पावन दुनिया में जावेंगे। यह थोड़े ही पावन नई दुनिया है। यह तो पुरानी तमोप्रधान दुनिया है। इन ल0ना0 का राज्य थोड़े ही है। इन्हों का राज्य नई दुनिया में था। अभी नहीं है। यह पुनर्जन्म लेते आये हैं। शास्त्रों में तो क्या–2 लिख दिया है। कृष्ण को दिखाया है अर्जुन के गाड़ी में बैठा है। ऐसे नहीं कि अर्जुन के अन्दर कृष्ण बैठा है। कृष्ण तो देहधारी था ना। न कोई लड़ाई आदि का ही बात है। उन्होंने तो पाण्डवों और कौरवों की लश्कर अलग–2 कर दिया है। यहाँ तो वह बात नहीं। बाप समझाते हैं यह भक्ति मार्ग के अथाह ढेर शास्त्र हैं। सतयुग में यह होते ही नहीं। वहाँ है ज्ञान की प्रारब्ध। राजधानी। भक्ति वहाँ होती नहीं। आधा कल्प वहाँ सुख ही सुख होता है। बाप नई दुनिया स्थापन करते हैं तो जरूर नई दुनिया में सुख ही होगा ना। बाप कब पुराना मकान बनाता है क्या। बाप तो नया मकान ही बनाते हैं। कब सुना कि पुराना मकान बनाते हैं? वह हैं हद के मकान। यह है नई दुनिया बनाने वाला जिसको सतोप्रधान कहा जाता है। पहले पवित्र थे। अभी तमोप्रधान अपवित्र हैं। अभी तुम पराये रावण राज्य में बैठे हो। राम तो कहा जाता है शिवबाबा को। राम–2 कह राम नाम का दान देते हैं। राम–राम कहो। अभी कहाँ (राम) कहाँ शिवबाबा। अभी शिवबाबा तुम बच्च(ीं) को कहते हैं मामेकम् याद करो। जहाँ से आये हो वहाँ फिर जाना है। जब तक बाप को याद कर पवित्र न बनेंगे तो वापस भी जा न सकेंगे। तुम्हारे में भी कोई बिरले हैं जो अच्छी रीत बाप को याद करते हैं। मुख से तो कहने की बात नहीं। भक्तिमार्ग में मुख से राम–2 कहते हैं। कोई न कहेंगे तो समझेंगे यह नास्तिक हैं। कितनी आवाज़ कर गाते हैं। जितना झाड़ बड़ा होता है वैसे भक्ति की भी सामग्री बड़ी है। बीज कितना छोटा होता है। झाड़ कर्मकाण्ड आदि की सामग्री कितनी है। कितने शास्त्र हैं। तुमको कोई चीज़ नहीं कोई आवाज़ नहीं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो मुख से कहना भी न है। लौकिक बाप भी बुद्धि से बाप को याद करते हैं। बाबा बाबा बैठ करते थोड़े ही हैं। तुम भी जानते हो हमारे शरीर का बाप तो है लौकिक। बाकी आत्मा का बाप कहाँ है यह पता नहीं। आत्माएँ तो सभी भाई–2 हैं। आत्मा का और कोई नाम नहीं। बाकी शरीर का नाम बदलता है। आत्मा तो आत्मा ही है। वह भी है परम आत्मा। उनका नाम है शिव। सभी आत्माओं का बाप है। अपना शरीर उनको नहीं है। बाप कहते हैं मुझे भी अगर अपना शरीर होता तो फिर पुनर्जन्म में आना पड़ता। फिर तुमको सद्गति कौन देते। भक्तिमार्ग में भी मुझे याद कर... अनेक प्रकार के चित्र हैं। महाराष्ट्रीयन किनता खर्चा कर गणेश का चित्र बनाते हैं। अभी ऐसा सूँढ़ वाला मनुष्य कब होता है क्या? कितनी पूजा करते हैं। यह सभी अन्धश्रद्धा हुई ना। मनुष्यों की बुद्धि कुछ भी काम नहीं करती। एकदम जैसे कि जट बुद्धि है। कहाँ फिर हनुमान को बहुत पूजते हैं। गवर्नर ने भी कहा है ना कि राम को वानरों

की सेना मिली तो स्वर्ग में चले गये। बच्चों ने समझाया है मेहनत कर; परन्तु फिर भी समझते थोड़े ही हैं। कहता है जन्म कलियुग में लिया है मरेंगे सतयुग में। अभी तुम नर्कवासी से स्वर्ग वासी बनते हो। जन्म तो नर्क में लिया है। मरेंगे स्वर्ग के लिए। यहाँ तुम आये ही हो स्वर्ग में जाने के लिए। बच्चों ने समझाया ऐसे है कि पुरु0 कर स्वर्ग में चलना है। उसने फिर समझा है जन्म नर्क में लिया है मरेंगे स्वर्ग में। उद्घाटन तो कराते हैं उद्घाटन कहा जाता है स्थापना को। जैसे कोई पुल आदि बनाते हैं तो पहले उद्घाटन शिरोमणि कर लेते हैं फिर पुल बनते रहते हैं। स्वर्ग की स्थापना का उद्घाटन तो बाप ने कर लिया है। अभी तैयारी होती रहती है। जब तक बच्चे कर्मातीत अवस्था को पायें। कर्मातीत अवस्था हुई और विनाश हो जावेगा। मकान बनने में टाइम लगता है क्या? गवर्मेन्ट करने पर आये तो एक मास में मकान झट खड़ा कर दे। विलायत में तो मकान तैयार के तैयार मिलते हैं। स्वर्ग मे तो विशाल बुद्धि सतोप्रधान होते हैं। साइंस की बुद्धि तीखी होती है। झट बनाते जावेंगे मकान। झाड़ भी बहुत लगते जावेंगे। आजकल इमीटेशन देखो कितना बनाते रहते हैं। वह तो फिर रीयल से भी जास्ती चमकता है। और आजकल तो मशीनरी से झट बना लेते हैं। वहाँ मकान बनने में देरी नहीं लगती। सफाई आदि होने में भी टाइम लगेगा। ऐसे नहीं कि सोने की लंका समुद्र से निकल आयेगी। तो बाप समझाते हैं खाओ–पीओ भल, सिर्फ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों और कोई उपाय नहीं। भक्तिमार्ग में तुमने कितने स्नान किये होंगे। कुम्भ के मेले में गये होंगे। स्नान तो घर में भी रोज़ करते रहते हो। देहली में पानी कहाँ से आता है। गंगा नदी से ही तो आता है ना। तो क्या उनसे पाप कट जाते हैं। फिर क्यों मेहनत करते हो हरद्वार जाने। पानी का बहुत महत्व रखते हैं। जन्म–जन्मान्तर यह गंगा स्नान आदि करते आये हो; परन्तु कोई भी मुक्ति–जीवनमुक्ति को पाते ही नहीं। यहाँ तो बाप पावन बनने की युक्ति बतलाते हैं। बाप कहते हैं मैं ही पतित–पावन हूँ। तुमने ही बुलाया है, हे! पतित–पावन आओ। हमको आकर पावन बनाओ। ड्रामा पूरा हुआ तो फिर सब एक्टर्स स्टेज पर होनी चाहिए। क्रियेटर भी होना चाहिए। सभी खड़े हो जाते हैं। यह भी ऐसे हैं। सभी आत्माएँ आ जावेंगी फिर वापस जाना होगा। मैं आता हूँ तो फिर यह कुदरती आपदाएँ भी आती हैं। अभी तुम तैयार ही नहीं हुए हो। कर्मातीत अवस्था ही न हुई है तो विनाश कैसे होगा। बाप आते हैं तुमको नई दुनिया के लिए पढ़ाने। वहाँ काल होता ही नहीं। अकाले मृत्यु होती ही नहीं। तुम काल पर जीत पहनते हो। कौन पहनाते हैं? कालों का काल। वह कितने को साथ ले जाते हैं। तुम खुश से जाते हो। बाबा आया है। शरीर तो छोड़ने का है ही। शरीर विनाशी है। आत्माएँ अविनाशी हैं। अभी बाप आये हैं सुखधाम की स्थापना करने। इसलिए उनकी महिमा है। यह भी कहते हैं ओ गॉड फादर लिबरेट करो दुख से। शान्ति सुख में ले चलो। मनुष्यों को यह पता नहीं है अभी रावण राज्य है। रावण बनाते हैं ऊपर में गदहे का सीस देते हैं। मनुष्य भी गदहे मिसल बन गये हैं। कुछ भी बुद्धि नहीं। अभी बाप आये हैं, स्वर्ग की रचना रच रहे हैं। तुम पहले–2 स्वर्ग में जावेंगे। वहाँ जरूर थोड़े होंगे। झाड़ बहुत छोटा होगा। फिर वृद्धि को पाता रहेगा। अभी देखो झाड़ कितना वृद्धि को पा लिया है। आयु तो पूरी होनी चाहिए ना। इनके राज्य में तो और कोई धर्म न था। अभी और सभी धर्म हैं वह एक धर्म है नहीं। नाम–रूप, देश–काल बदल जाते हैं ना। राजाई भी बदल जाती है। पहले होते हैं डबल सिरताज। फिर सिंगल ताज वाले बन जाते हैं। सोमनाथ का मंदिर बनाया कितना धन था। मंदिर तो और भी होंगे। एक थोड़े ही होगा; परन्तु यह था सबसे बड़ा। एक ही मंदिर से कितना लूटकर ले गये। बाप कहते हैं मैं तुमको इतना धनवान बनाता हूँ। तुम पद्मापदम भाग्यशाली बनते हो। कदम–2 पर बाप को याद करते रहो तो पदम इकट्ठे होंगे। इतनी कमाई बाप को याद करने में है। फिर ऐसे बाप को भूलते क्यों हो। जितना याद करेंगे, सर्विस करेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। अच्छे–2 बच्चे चलते–2 गिर पड़ते हैं। काला मुँह कर दिया की कमाई चट हो जाती है। जबरदस्त लॉटरी गंवा देते हैं। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।